

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन में भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं की भूमिका और समकालीन चुनौतियाँ

नवीन चंद्रा सिंह<sup>1</sup> ; डॉ० श्रवण कुमार<sup>2</sup>

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23307461>

Review: 03/09/2026

Acceptance: 09/09/2026

Publication: 13/10/2026

**शोध सारांश:** प्रस्तुत शोध-पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के संदर्भ में भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं की भूमिका, संभावनाओं और समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त दर्शनों के प्रमुख शैक्षिक विचारों को ज्ञान निर्माण, तार्किक चिंतन, आत्मनियमन, नैतिक विकास, अनुभवात्मक अधिगम और समग्र व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में विवेचित किया गया है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि ये दार्शनिक अवधारणाएँ नीति के बहुविषयक, मूल्यपरक, चिंतनशील और विद्यार्थी-केंद्रित शैक्षिक उद्देश्यों को वैचारिक समर्थन प्रदान कर सकती हैं। साथ ही, इनके क्रियान्वयन में पाठ्यचर्या संबंधी जटिलता, शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी, वैचारिक विविधता, संसाधनों की असमानता तथा आधुनिक वैज्ञानिक और संवैधानिक मूल्यों के साथ समन्वय जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। अध्ययन इस बात पर बल देता है कि भारतीय दर्शन का शैक्षिक समावेशन आलोचनात्मक, समावेशी, प्रमाणाधारित और समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। इसके लिए शिक्षक-शिक्षा, पाठ्यचर्या विकास और अनुभवजन्य अनुसंधान को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

**मुख्य शब्द:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020; भारतीय षड्-दर्शन; समग्र शिक्षा; अनुभवात्मक अधिगम; शिक्षक-शिक्षा।

**प्रस्तावना:** शिक्षा भारतीय ज्ञानपरंपरा में केवल सूचना अथवा कौशल प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में विकसित हुई है। भारतीय षड्-दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त—ज्ञान, सत्य, आत्मानुशासन, तर्क, कर्तव्य तथा जीवन के उद्देश्य से संबंधित विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक मूल्यों तथा भारतीय ज्ञानपरंपराओं से जुड़ाव पर बल दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। राव और जोशी (2020) ने भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं के अध्ययन में ज्ञान, यथार्थ और मानव जीवन से संबंधित वैचारिक आधारों को रेखांकित किया है। देव (2022) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के विद्यालयी, शिक्षक एवं उच्च शिक्षा संबंधी प्रावधानों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए इसके परिवर्तनकारी उद्देश्यों और क्रियान्वयन संबंधी प्रश्नों पर चर्चा की। इसी क्रम में सिंह और सिंह (2022) ने भारतीय शैक्षिक दर्शन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के मध्य संभावित सामंजस्य का अध्ययन किया। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भारतीय दार्शनिक अवधारणाओं का समकालीन शैक्षिक नीतियों के संदर्भ में विश्लेषण एक महत्वपूर्ण अकादमिक आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के समावेशन को लेकर विभिन्न विद्वानों ने दार्शनिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। खानम, इस्लाम और सहलेखकों (2024) ने आधुनिक शिक्षा में दर्शन की भूमिका का विवेचन करते हुए पाठ्यचर्या, नैतिक तर्क, आलोचनात्मक चिंतन और समग्र विकास के बीच संबंधों पर बल दिया। उनके अध्ययन में यह संकेत मिलता है कि दार्शनिक विचारों को शिक्षा में सम्मिलित करने के लिए सैद्धांतिक स्वीकृति के साथ-साथ व्यवस्थित शैक्षिक योजना भी आवश्यक है। कुमार और सिंह (2025) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत भारतीय शैक्षिक दर्शन, समग्र अधिगम और स्वदेशी ज्ञान के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन में नीति की

<sup>1</sup> शोध छात्रा, शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), कोटवां, जमुनीपुर, दुबावल, प्रयागराज (उ०प्र०), इंडिया

<sup>2</sup> असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), कोटवां, जमुनीपुर, दुबावल, प्रयागराज (उ०प्र०), इंडिया

आधुनिक आवश्यकताओं तथा भारतीय बौद्धिक परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती पर विचार किया गया है। वहीं, इस्सर (2024) ने 'धर्म' की अवधारणा को नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा के संदर्भ में प्रस्तुत करते हुए उसके समकालीन पाठ्यचर्या में संभावित उपयोग पर चर्चा की। इन अध्ययनों से यह प्रश्न उभरता है कि षड्-दर्शन की विशिष्ट ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय अवधारणाओं को किस प्रकार समावेशी, तर्कसंगत और लोकतांत्रिक शैक्षिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित किया जा सकता है।

भारतीय दर्शन और समकालीन शिक्षा के संबंध में उपलब्ध साहित्य में समग्र व्यक्तित्व-विकास, आत्मचेतना, नैतिकता और अनुभवात्मक अधिगम को प्रमुख स्थान दिया गया है। पंवार और अमीन (2023) ने आचार्य रजनीश की शैक्षिक विचारधारा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के बीच संबंधों का अध्ययन करते हुए आत्मजागरूकता और आत्मपरिवर्तन की अवधारणाओं को रेखांकित किया। यद्यपि यह अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से षड्-दर्शन पर केंद्रित नहीं है, फिर भी यह भारतीय दार्शनिक परंपराओं की समकालीन शैक्षिक पुनर्व्याख्या के लिए उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करता है। लक्ष्मी (2025) ने भारतीय शैक्षिक दर्शन, गुरुकुल परंपरा, मूल्यपरक अधिगम और बहुविषयक शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संभावित दार्शनिक पृष्ठभूमि का विवेचन किया। इसी प्रकार, सतपति (2026) ने स्वामी विवेकानन्द के 'मनुष्य-निर्माण' संबंधी विचारों को उच्च शिक्षा के संदर्भ में विश्लेषित करते हुए बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के समन्वय पर बल दिया। इन अध्ययनों का आलोचनात्मक अवलोकन यह दर्शाता है कि भारतीय दर्शन की शैक्षिक उपयोगिता केवल परंपरा के पुनर्स्मरण तक सीमित नहीं होनी चाहिए; इसके लिए अवधारणाओं की ऐतिहासिक संदर्भ-संवेदनशीलता, समकालीन प्रासंगिकता और व्यावहारिक शैक्षिक उपयोगिता का परीक्षण आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन पर केंद्रित समीक्षात्मक अध्ययनों में नीति के उद्देश्यों और व्यावहारिक चुनौतियों के बीच संबंध को विशेष महत्व दिया गया है। 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पेडागॉजी एंड टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन एंड मूवमेंट साइंसेज' में प्रकाशित समीक्षा ने नीति के पाठ्यचर्या, शिक्षक शिक्षा, उच्च शिक्षा, अनुसंधान और डिजिटल अधिगम संबंधी प्रावधानों का विश्लेषण करते हुए संसाधनों की कमी, संस्थागत तैयारी, शिक्षक क्षमता और भाषायी विविधता को प्रमुख चुनौतियों के रूप में प्रस्तुत किया (2021)। कुलाल और सहलेखकों (2024) ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और विशेषज्ञों के दृष्टिकोणों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संभावनाओं तथा सीमाओं का अध्ययन किया। समीक्षा में नीति की व्यापक दृष्टि के साथ उसके क्रियान्वयन से संबंधित विभिन्न हितधारकों की चिंताओं पर ध्यान दिया गया। सेल्वम, परमशिवन और रविचन्द्रन (2024) ने आधुनिक शिक्षा में दर्शन की भूमिका पर विचार करते हुए आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक विवेक और समग्र विकास के महत्व को रेखांकित किया। उपलब्ध साहित्य से यह शोध-अंतर स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में भारतीय षड्-दर्शन की छह परंपराओं का तुलनात्मक, आलोचनात्मक और क्रियान्वयन-केंद्रित अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर को संबोधित करने का प्रयास करता है।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का दार्शनिक आधार:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समग्र, लचीला, समावेशी और ज्ञान-केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण नीतिगत प्रयास प्रस्तुत करती है। इसका दार्शनिक आधार शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति या विषयगत जानकारी अर्जित करने की प्रक्रिया तक सीमित न रखकर व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और रचनात्मक विकास से जोड़ता है। नीति में आलोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक शिक्षा, मातृभाषा तथा भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रति संवेदनशीलता पर बल दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। इन उद्देश्यों का संबंध भारतीय दार्शनिक चिंतन की उन अवधारणाओं से स्थापित किया जा सकता है, जिनमें ज्ञान, आत्मानुशासन, विवेक, नैतिक आचरण और जीवन के व्यापक उद्देश्य को महत्व दिया गया है। तथापि, भारतीय दर्शन और आधुनिक शिक्षा नीति के बीच संबंध को स्थापित करते समय ऐतिहासिक संदर्भों तथा वैचारिक भिन्नताओं का ध्यान रखना आवश्यक है। षड्-दर्शन की अवधारणाओं को वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में यांत्रिक रूप से लागू करने के स्थान पर उनके ज्ञानमीमांसीय, नैतिक और शिक्षण-संबंधी पक्षों की आलोचनात्मक व्याख्या अधिक उपयोगी हो सकती है। इस दृष्टि से नीति का दार्शनिक आधार परंपरा और समकालीन आवश्यकताओं के बीच संवाद की संभावना निर्मित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज की बहुलतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत तथा आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती से भी जुड़ा है। भारतीय षड्-दर्शन में ज्ञान की प्रकृति, सत्य की खोज, तर्क, अनुभव, कर्तव्य और आत्मविकास के संबंध में अलग-अलग दृष्टिकोण मिलते हैं। इन विचारों का शैक्षिक उपयोग तभी सार्थक हो सकता है, जब उन्हें प्रश्नाकुलता, संवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ा जाए। उदाहरण के लिए, न्याय दर्शन की तर्कपरक परंपरा आलोचनात्मक विचार-विमर्श के लिए उपयोगी संदर्भ दे सकती है, जबकि योग दर्शन आत्मनियंत्रण और एकाग्रता के विकास पर विचार प्रस्तुत करता है। परंतु किसी भी दार्शनिक अवधारणा को सार्वभौमिक अथवा अंतिम समाधान मानना अकादमिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। नीति के क्रियान्वयन में सामाजिक विविधता, लैंगिक समानता, समावेशन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विद्यार्थियों के अधिकारों को समान महत्त्व देना आवश्यक है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का दार्शनिक आधार भारतीय चिंतन की पुनर्व्याख्या, आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों के समन्वय और व्यावहारिक संस्थागत आवश्यकताओं के बीच निरंतर संवाद के रूप में समझा जाना चाहिए।

**षड्-दर्शन: परिचय एवं शैक्षिक दृष्टि:** भारतीय षड्-दर्शन से सामान्यतः आस्तिक दार्शनिक परंपराओं के छह प्रमुख तंत्रों—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा और वेदान्त—का अभिप्राय लिया जाता है। इन दर्शनों में वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने का दृष्टिकोण विभिन्न रूपों में उपस्थित है, यद्यपि उनके ज्ञान, वास्तविकता, आत्मा, जगत और मुक्ति संबंधी निष्कर्षों में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष के विवेचन के माध्यम से ज्ञान तथा विवेक की भूमिका पर बल देता है, जबकि योग दर्शन अभ्यास, अनुशासन और चित्तवृत्तियों के नियमन को महत्वपूर्ण मानता है। न्याय दर्शन प्रमाण, तर्क और युक्तिपूर्ण ज्ञान के विश्लेषण से संबंधित है तथा वैशेषिक दर्शन पदार्थों और उनके गुणों के वर्गीकरण पर केंद्रित है। पूर्वमीमांसा कर्तव्य, कर्म और वैदिक वाक्यों की व्याख्या से जुड़ी है, जबकि वेदान्त ब्रह्म, आत्मा और अंतिम वास्तविकता के प्रश्नों पर विचार करता है। शैक्षिक दृष्टि से इन परंपराओं का अध्ययन ज्ञान के विविध मार्गों और बौद्धिक अनुशासन को समझने का अवसर प्रदान करता है। फिर भी, इनका समकालीन उपयोग ऐतिहासिक तथा दार्शनिक संदर्भों की सावधानीपूर्ण समझ पर आधारित होना चाहिए।

षड्-दर्शन की शैक्षिक दृष्टि को किसी एक समान शिक्षण-पद्धति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रत्येक दर्शन की ज्ञानमीमांसा, मानव-दृष्टि और साधना-पद्धति अलग है। फिर भी, इनके बीच कुछ ऐसे वैचारिक क्षेत्र पहचाने जा सकते हैं, जो शिक्षा के समकालीन विमर्श से संवाद स्थापित करते हैं। न्याय दर्शन प्रमाण और तर्क के माध्यम से ज्ञान की विश्वसनीयता पर विचार करता है, जिससे आलोचनात्मक चिंतन और प्रमाण-आधारित निष्कर्षों की चर्चा को आधार मिल सकता है। वैशेषिक दर्शन का वर्गीकरणात्मक दृष्टिकोण निरीक्षण और अवधारणात्मक स्पष्टता से संबंधित अध्ययन के लिए उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करता है। सांख्य और योग में आत्मबोध, विवेक, अनुशासन तथा मानसिक एकाग्रता की चर्चा मिलती है, जबकि मीमांसा और वेदान्त कर्तव्य, मूल्य, आत्मचिंतन तथा जीवन के उद्देश्य से जुड़े प्रश्न उठाते हैं। इन अवधारणाओं को आधुनिक पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते समय उन्हें आलोचनात्मक, समावेशी और बहुविषयक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक है। इस प्रकार षड्-दर्शन का शैक्षिक महत्त्व किसी रूढ़ पुनरावृत्ति में नहीं, बल्कि ज्ञान, नैतिकता, तर्क और आत्मविकास पर संवाद को समृद्ध करने की उसकी संभावित क्षमता में निहित है।

**सांख्य एवं योग की शैक्षिक प्रासंगिकता:** सांख्य दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा में प्रकृति और पुरुष के भेद, विवेक तथा ज्ञान के माध्यम से बंधन से मुक्ति की अवधारणा के लिए जाना जाता है। इसकी मूल वैचारिक संरचना में अनुभव-जगत, मानसिक प्रक्रियाओं और चेतना के संबंधों पर विचार किया गया है। शिक्षा के संदर्भ में सांख्य दृष्टिकोण को विवेकपूर्ण समझ, आत्मनिरीक्षण और व्यक्ति के विभिन्न आयामों की पहचान से जोड़ा जा सकता है। यह दृष्टि विद्यार्थियों को केवल बाहरी उपलब्धियों के आधार पर समझने के बजाय उनके संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारगत पक्षों पर विचार करने की प्रेरणा दे सकती है। हालांकि, सांख्य के दार्शनिक द्वैत को आधुनिक मनोविज्ञान अथवा वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रत्यक्ष विकल्प मानना उचित नहीं होगा। इसकी शैक्षिक प्रासंगिकता मुख्यतः वैचारिक और व्याख्यात्मक स्तर पर देखी जानी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में समग्र विकास, आत्मचिंतन और सीखने की विविध आवश्यकताओं पर बल दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। इस संदर्भ में

सांख्य का विवेक, आत्मबोध और प्रकृति-संबंधी चिंतन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-विकास तथा ज्ञान के आलोचनात्मक अध्ययन के लिए एक दार्शनिक आधार उपलब्ध करा सकता है।

योग दर्शन की शैक्षिक प्रासंगिकता अभ्यास, आत्मनियंत्रण, एकाग्रता और मानसिक अनुशासन से संबंधित अवधारणाओं में दिखाई देती है। पतंजलि के योगसूत्र में चित्तवृत्ति-निरोध, अभ्यास और वैराग्य जैसे विचारों के माध्यम से मन की स्थिरता तथा आत्मनियमन पर विचार किया गया है। समकालीन शिक्षा में इन अवधारणाओं को विद्यार्थियों की एकाग्रता, तनाव-प्रबंधन, आत्मपर्यवेक्षण और संतुलित व्यवहार के संदर्भ में समझा जा सकता है। हालांकि, योग को केवल परीक्षा-प्रदर्शन या उत्पादकता बढ़ाने की तकनीक तक सीमित करना इसके व्यापक दार्शनिक और नैतिक आयामों को संकुचित कर सकता है। योग की शैक्षिक उपयोगिता तभी अधिक सार्थक होगी, जब इसे स्वैच्छिक सहभागिता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, वैज्ञानिक सावधानी और विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के समग्र शिक्षा संबंधी उद्देश्यों के संदर्भ में योग-आधारित गतिविधियाँ शारीरिक स्वास्थ्य, आत्म-जागरूकता और भावनात्मक संतुलन को समर्थन दे सकती हैं। फिर भी, इनके प्रभावों का मूल्यांकन प्रमाण-आधारित अनुसंधान तथा संदर्भ-विशिष्ट शैक्षिक प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जाना आवश्यक है।

**न्याय एवं वैशेषिक में तार्किक चिंतन:** भारतीय षड्-दर्शन में न्याय एवं वैशेषिक दर्शन तार्किक चिंतन, प्रमाणाधारित ज्ञान तथा वस्तुनिष्ठ विश्लेषण की महत्वपूर्ण परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। न्याय दर्शन ज्ञान की सत्यता के परीक्षण के लिए प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द जैसे प्रमाणों को महत्व देता है, जबकि वैशेषिक दर्शन पदार्थों, उनके गुणों तथा पारस्परिक संबंधों के व्यवस्थित विश्लेषण पर बल देता है। इन दोनों दर्शनों की शैक्षिक प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि वे विद्यार्थियों को किसी भी निष्कर्ष को बिना परीक्षण स्वीकार करने के बजाय तर्क, प्रमाण और विवेक के आधार पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण और अनुभवात्मक अधिगम को दिए गए महत्व के संदर्भ में न्याय एवं वैशेषिक की अवधारणाएँ उपयोगी आधार प्रदान कर सकती हैं। इनके शैक्षिक समावेशन से विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने, तथ्यों का परीक्षण करने और विभिन्न दृष्टिकोणों का तुलनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। हालांकि, इन दर्शनों का प्रयोग केवल पारंपरिक सिद्धांतों के पुनरुत्पादन तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि आधुनिक विज्ञान, लोकतांत्रिक मूल्यों और समावेशी ज्ञान-दृष्टि के साथ आलोचनात्मक संवाद स्थापित करते हुए किया जाना आवश्यक है।

**मीमांसा एवं वेदान्त के शैक्षिक विचार:** मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा में कर्तव्य, नैतिक अनुशासन, आत्मचिंतन, ज्ञान और जीवन के व्यापक उद्देश्य से संबंधित महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। मीमांसा दर्शन में कर्तव्यपालन, नैतिक आचरण तथा ज्ञान के व्यवस्थित अध्ययन पर बल मिलता है, जबकि वेदान्त दर्शन आत्मज्ञान, समग्र दृष्टिकोण और व्यक्ति तथा व्यापक अस्तित्व के संबंधों की विवेचना करता है। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इन दर्शनों की उपयोगिता विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व, आत्मानुशासन, नैतिक संवेदनशीलता और चिंतनशीलता के विकास से संबंधित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण, भारतीय ज्ञान परंपरा और समग्र व्यक्तित्व विकास पर दिया गया जोर इन दार्शनिक अवधारणाओं के साथ संवाद का अवसर प्रस्तुत करता है। तथापि, मीमांसा एवं वेदान्त के विचारों को शिक्षा में लागू करते समय धार्मिक आग्रह, रूढ़िवादिता अथवा किसी एक दार्शनिक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करने से बचना आवश्यक है। इनके शैक्षिक उपयोग को बहुलतावादी, संवैधानिक और आलोचनात्मक दृष्टि से विकसित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी नैतिक प्रश्नों पर स्वतंत्र चिंतन कर सकें तथा ज्ञान, आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलित संबंध स्थापित कर सकें।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में षड्-दर्शन की भूमिका:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, समग्र शिक्षा, बहुविषयक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन और मूल्यपरक विकास को शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों से जोड़ती है। इस संदर्भ में भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाएँ विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और आत्मचिंतनात्मक विकास के लिए वैचारिक संसाधन उपलब्ध करा सकती हैं। सांख्य दर्शन विवेक एवं चेतना के विश्लेषण, योग आत्मनियंत्रण एवं एकाग्रता, न्याय तर्क एवं प्रमाण, वैशेषिक वस्तु-विवेचन, मीमांसा कर्तव्य एवं नैतिक अनुशासन

तथा वेदान्त आत्मज्ञान एवं समग्र दृष्टिकोण से संबंधित विचार प्रस्तुत करते हैं। इन अवधारणाओं का नीति के संदर्भ में महत्त्व तभी प्रभावी हो सकता है, जब उन्हें समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों के साथ समन्वित किया जाए। षड्-दर्शन का समावेशन केवल पाठ्यक्रम में पारंपरिक विषयों को जोड़ने तक सीमित न रहकर संवादात्मक शिक्षण, चिंतनशील गतिविधियों, नैतिक विमर्श और अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षक-प्रशिक्षण, उपयुक्त शिक्षण-सामग्री और बहुविषयक शोध की आवश्यकता होगी, जिससे भारतीय दार्शनिक विरासत का अध्ययन आलोचनात्मक, समावेशी और समकालीन संदर्भों के अनुरूप विकसित हो सके।

**समग्र शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास:** समग्र शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसके भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक, शारीरिक और आत्मचिंतनात्मक पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित करना है। भारतीय षड्-दर्शन इस व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण को विभिन्न वैचारिक आधार प्रदान कर सकता है। सांख्य का विवेक-बोध, योग का आत्मनियंत्रण एवं एकाग्रता, न्याय का तार्किक परीक्षण, वैशेषिक का विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, मीमांसा का कर्तव्यबोध और वेदान्त का आत्मचिंतन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विविध आयामों को समझने में सहायक हो सकते हैं। इन अवधारणाओं को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में संवाद, समस्या-समाधान, ध्यानात्मक अभ्यास, नैतिक दुविधाओं पर चर्चा, सहयोगात्मक गतिविधियों और आत्ममूल्यांकन के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है। इससे शिक्षा केवल परीक्षा-केंद्रित उपलब्धियों तक सीमित न रहकर आत्मविश्वास, सामाजिक संवेदनशीलता, निर्णय क्षमता और उत्तरदायित्व जैसे गुणों के विकास की दिशा में आगे बढ़ सकती है। फिर भी, समग्र व्यक्तित्व विकास को किसी एक सांस्कृतिक या दार्शनिक मॉडल तक सीमित करना उचित नहीं होगा। इसके लिए विद्यार्थियों की विविध सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत पृष्ठभूमियों का सम्मान करते हुए स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता और मानवीय गरिमा को शिक्षा के केंद्रीय आधार के रूप में बनाए रखना आवश्यक है।

**ज्ञान निर्माण एवं अनुभवात्मक अधिगम:** भारतीय षड्-दर्शन ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को केवल सूचनाओं के संचय के रूप में नहीं, बल्कि तर्क, अनुभव, आत्मचिंतन, विवेक और सत्य की खोज से जुड़ी एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखने का अवसर प्रदान करता है। न्याय दर्शन प्रमाण, तर्क और परीक्षण के माध्यम से ज्ञान की विश्वसनीयता पर बल देता है, जबकि वैशेषिक दर्शन वस्तुओं, गुणों और उनके संबंधों के विश्लेषण को महत्त्व देता है। सांख्य दर्शन विवेकपूर्ण भेदबोध तथा योग दर्शन एकाग्रता, अनुशासन और आत्मानुभूति के विकास पर केंद्रित है। इन विचारों को अनुभवात्मक अधिगम से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, अवलोकन करने, प्रयोग करने, तर्क प्रस्तुत करने और अपने अनुभवों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के अवसर दिए जा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर समझ, कौशल, समस्या-समाधान और बहुविषयक अधिगम को महत्त्व दिया गया है। इस दृष्टि से षड्-दर्शन विद्यार्थियों को ज्ञान के निष्क्रिय ग्रहणकर्ता के बजाय सक्रिय सहभागी के रूप में विकसित करने में सहायक हो सकता है। हालांकि, इसके लिए दार्शनिक अवधारणाओं को समकालीन शिक्षण विधियों और विषयगत संदर्भों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करना आवश्यक होगा।

अनुभवात्मक अधिगम में ज्ञान का निर्माण विद्यार्थी की प्रत्यक्ष सहभागिता, सामाजिक अंतःक्रिया और वास्तविक जीवन की समस्याओं से जुड़कर होता है। भारतीय दार्शनिक परंपराओं के अंतर्गत संवाद, प्रश्नोत्तर, चिंतन, निरीक्षण और आत्मपरीक्षण जैसी प्रक्रियाएँ इस प्रकार के अधिगम को वैचारिक आधार प्रदान कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, न्याय दर्शन की तर्क-पद्धति का उपयोग वाद-विवाद, प्रमाणों के परीक्षण और समस्या-आधारित शिक्षण में किया जा सकता है, जबकि योग से संबंधित एकाग्रता एवं आत्मनियमन की अवधारणाओं को चिंतनशील गतिविधियों और ध्यानपूर्वक अधिगम के संदर्भ में समझा जा सकता है। इसी प्रकार, मीमांसा एवं वेदान्त के विचारों को नैतिक दुविधाओं, कर्तव्य, आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े विमर्शों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। ऐसी शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक क्षमता, रचनात्मकता, सहयोग, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की योग्यता को विकसित कर सकती है। फिर भी, अनुभवात्मक अधिगम को प्रभावी बनाने

के लिए शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न रहकर मार्गदर्शक, सह-अध्येता और चिंतन को प्रेरित करने वाले सहयोगी की होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में अनुभव, तर्क और प्रमाण के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

**क्रियान्वयन की संभावनाएँ:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन में भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं को समाहित करने की पर्याप्त संभावनाएँ दिखाई देती हैं, विशेषकर समग्र शिक्षा, मूल्यपरक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन, भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक शिक्षा के क्षेत्रों में। इन अवधारणाओं को विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वतंत्र विषय के रूप में ही नहीं, बल्कि विभिन्न विषयों के अंतर्विषयक संदर्भों में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। दर्शन, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भाषा, विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन के बीच संवाद स्थापित करके विद्यार्थियों को भारतीय चिंतन की विविधता तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता समझने का अवसर मिल सकता है। न्याय और वैशेषिक को तार्किक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन, सांख्य और योग को आत्मचिंतन तथा आत्मनियमन, जबकि मीमांसा और वेदान्त को नैतिक विवेक एवं जीवन-दृष्टि से जोड़ा जा सकता है। इस दिशा में पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षण-सामग्री विकास और शिक्षक-प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। हालांकि, दार्शनिक अवधारणाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करते समय ऐतिहासिक संदर्भ, वैचारिक विविधता और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ उनके संबंधों का आलोचनात्मक परीक्षण किया जाना चाहिए। इससे समावेशन केवल औपचारिक न रहकर शैक्षिक रूप से सार्थक बनाया जा सकेगा।

षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए संस्थागत तैयारी, प्रशिक्षित शिक्षक, उपयुक्त संसाधन और शोध-आधारित शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता होगी। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय दर्शन के शैक्षिक पक्षों को समकालीन शिक्षाशास्त्र, बाल-केंद्रित शिक्षा, समावेशी दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ा जा सकता है। कक्षा-कक्ष में संवादात्मक चर्चा, परियोजना-आधारित अधिगम, समस्या-समाधान, चिंतनशील लेखन, समूह-विमर्श और स्थानीय ज्ञान परंपराओं के अध्ययन जैसी गतिविधियों के माध्यम से इन अवधारणाओं को व्यवहार में लाया जा सकता है। डिजिटल तकनीक का उपयोग प्राचीन ग्रंथों, व्याख्यात्मक सामग्री, तुलनात्मक अध्ययन और बहुभाषिक संसाधनों तक विद्यार्थियों की पहुँच बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। इसके साथ ही, पाठ्यक्रम और शिक्षण-पद्धतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन केवल परीक्षा परिणामों से नहीं, बल्कि तर्क क्षमता, नैतिक निर्णय, सामाजिक संवेदनशीलता और आत्मचिंतन जैसे अधिगम परिणामों के आधार पर भी किया जाना चाहिए। क्रियान्वयन की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि भारतीय दार्शनिक विचारों को किस सीमा तक आलोचनात्मक, लोकतांत्रिक और समावेशी शैक्षिक परिवेश में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए चरणबद्ध प्रयोग, शिक्षक सहयोग और निरंतर मूल्यांकन आवश्यक होंगे।

**समकालीन चुनौतियाँ एवं सीमाएँ:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं को लागू करने की प्रक्रिया अनेक वैचारिक, व्यावहारिक और संस्थागत चुनौतियों से प्रभावित हो सकती है। पहली चुनौती इन दार्शनिक प्रणालियों की जटिलता, विविधता और ऐतिहासिक संदर्भों को सरल तथा शिक्षणोपयोगी रूप में प्रस्तुत करने से संबंधित है। यदि षड्-दर्शन को केवल गौरवगान, सांस्कृतिक प्रतीक या अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसका आलोचनात्मक और शैक्षिक महत्त्व सीमित हो सकता है। दूसरी चुनौती विभिन्न दर्शनों की अवधारणाओं को आधुनिक विज्ञान, लोकतांत्रिक मूल्यों, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के साथ संतुलित करना है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों में भारतीय दर्शन की पर्याप्त विषयगत समझ और उसे समकालीन शिक्षण-पद्धतियों से जोड़ने की क्षमता का अभाव भी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकता है। पाठ्यक्रम में पहले से मौजूद विषय-वस्तु, समय की सीमाएँ, संसाधनों की असमान उपलब्धता और मूल्यांकन प्रणाली का परीक्षा-केंद्रित स्वरूप भी इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। अतः षड्-दर्शन के समावेशन के लिए स्पष्ट शैक्षिक उद्देश्यों, प्रमाणाधारित सामग्री और शिक्षक-प्रशिक्षण की सुविचारित व्यवस्था आवश्यक होगी।

षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाओं के समकालीन उपयोग की एक अन्य सीमा यह है कि प्राचीन दार्शनिक विचारों को वर्तमान सामाजिक और शैक्षिक परिस्थितियों में सीधे लागू नहीं किया जा सकता। प्रत्येक दर्शन विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और ज्ञानमीमांसीय संदर्भ में विकसित हुआ है; इसलिए उसके सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप समझने और पुनर्व्याख्यायित करने की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों की सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा, लैंगिक पहचान, क्षमता और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखे बिना किसी एक दार्शनिक दृष्टिकोण का एकरूप प्रयोग समावेशी शिक्षा के उद्देश्य को कमजोर कर सकता है। इसी प्रकार, योग, आत्मज्ञान, कर्तव्य या नैतिक अनुशासन जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, वैज्ञानिक प्रमाण और संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता का सम्मान किया जाना चाहिए। सीमित शोध-साक्ष्य, उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों की कमी और संस्थागत स्तर पर असमान तैयारी भी प्रभावशीलता के आकलन को कठिन बना सकती है। इसलिए भविष्य की रणनीतियों में तुलनात्मक अध्ययन, पायलट प्रोजेक्ट, शिक्षक-अनुभवों का विश्लेषण और विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों का व्यवस्थित मूल्यांकन शामिल किया जाना चाहिए।

**निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ:** प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारतीय षड्-दर्शन की शैक्षिक अवधारणाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति—2020 के समग्र, मूल्यपरक, अनुभवात्मक एवं चिंतनशील शिक्षा संबंधी उद्देश्यों को वैचारिक आधार प्रदान कर सकती हैं। सांख्य और योग आत्मचिंतन, आत्मनियमन तथा एकाग्रता के विकास पर, न्याय और वैशेषिक तर्कसंगत एवं प्रमाणाधारित चिंतन पर, जबकि मीमांसा और वेदान्त कर्तव्यबोध, नैतिक विवेक तथा व्यापक जीवन-दृष्टि पर बल देते हैं। इन अवधारणाओं का समकालीन शिक्षा में उपयोग विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को प्रोत्साहित कर सकता है। हालांकि, इनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए ऐतिहासिक संदर्भों की समुचित समझ, आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या, प्रशिक्षित शिक्षक, उपयुक्त पाठ्य-सामग्री और समावेशी शिक्षण-पद्धतियों की आवश्यकता होगी। शैक्षिक निहितार्थ के रूप में शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रमों में भारतीय दर्शन के शैक्षिक पक्षों को आधुनिक शिक्षाशास्त्र, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। कक्षा-कक्ष में संवाद, समस्या-समाधान, अनुभवात्मक गतिविधियों, चिंतनशील लेखन और नैतिक विमर्श को प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही, पाठ्यक्रम निर्माण में सांस्कृतिक विविधता, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का ध्यान रखना अनिवार्य है। भविष्य में अनुभवजन्य शोध के माध्यम से यह जाँचना आवश्यक होगा कि इन अवधारणाओं का विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता, आत्मनियमन, नैतिक निर्णय और अधिगम परिणामों पर वास्तविक प्रभाव किस सीमा तक पड़ता है। इस प्रकार, षड्-दर्शन का समावेशन परंपरा के पुनरुत्पादन के बजाय आलोचनात्मक, समावेशी और समकालीन शैक्षिक पुनर्संरचना की प्रक्रिया बनना चाहिए।

## सन्दर्भ सूची

- इस्सर, सुयाशा सिंह (2024). वैल्यू-बेस्ड एजुकेशन इन एनईपी 2020: फोस्टरिंग एथिकल एंड मॉरल ग्रोथ थ्रू धर्म. *एशियन एजुकेशन एंड डेवलपमेंट स्टडीज*, 13(5), 579–597. <https://doi.org/10.1108/AEDS-06-2024-0121>
- कुमार, अजय, एवं सिंह, यज्ञपाल (2025). एजुकेशन फिलॉसफी इन इंडिया अंडर एनईपी 2020: अ पैराडाइम शिफ्ट टुवर्ड्स होलिस्टिक एंड इंडिजिनस लर्निंग. *जर्नल ऑफ रिव्यू इन इंटरनेशनल अकैडमिक रिसर्च*, 1(6), 105–110. <https://doi.org/10.5281/d7d2jp89>
- पंवार, प्राची, एवं अमीन, जे. एन. (2023). रिलेवेंस ऑफ एनईपी 2020 विद आचार्य रजनीश'स एजुकेशनल फिलॉसफी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. <https://doi.org/10.25215/1104.134>
- पिथाडिया, नितिनकुमार वी. (2026). फ्रॉम ट्रेडिशन टू ट्रांसफॉर्मेशन: इंटीग्रेटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम्स एंड एनईपी 2020 फॉर कंटेम्पररी एजुकेशन. *विद्यायन*, 11(विशेषांक 2). <https://doi.org/10.58213/6eyjsq94>

- राजखोवा, बिनोय ब्रोत, एवं पात्रा, दीपेन (2026). इंडियन नॉलेज सिस्टम्स एंड एजुकेशनल ट्रांसफॉर्मेशन: एजामिनिंग वेदिक फाउंडेशन्स इन एनईपी 2020. *जर्नल ऑफ एडवांस एंड प्यूचर रिसर्च*. <https://rjwave.org/jaafr/viewpaperforall.php?paper=JAAFR2603310>
- राव, गौरव, जोशी, विभा, सिंह, सुनीता, श्रीवास्तव, आशीष, एवं धांकर, नीरजा (2020). फिलॉसफिकल पर्सपेक्टिव ऑफ एजुकेशन: ब्लॉक-2. *इग्नू ई-ज्ञानकोश*. <https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/68564>
- लक्ष्मी, आर. (2025). रिवाइविंग एंशिएंट विजडम: एजुकेशनल फिलॉसफीज ऑफ इंडिया एंड देयर रिफ्लेक्शन इन एनईपी 2020. *एजुफोकस*, 20(1).
- वेंकटसुब्रमणियन, अरविन्द (2020). द कन्ड्रम इन द कलेक्टिव इंडियन साइकी रिगार्डिंग टीचिंग फिलॉसफी इन स्कूल्स. *चाइल्डहुड एंड फिलॉसफी*, 16(36), 1–26. <https://doi.org/10.12957/childphilo.2020.53518>
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (National Education Policy 2020)*. भारत सरकार.
- सतपति, संदीप (2026). स्ट्रेटेजिक इंटीग्रेशन ऑफ स्वामी विवेकानन्द'स मैन-मेकिंग फिलॉसफी इंटू इंडियन हायर एजुकेशन अंडर एनईपी 2020. *डिस्कवर एजुकेशन*. <https://doi.org/10.1007/s44217-026-01856-5>
- सिंह, निधि, एवं सिंह, संजय कुमार (2022). इंडियन एजुकेशनल फिलॉसफी एंड न्यू एजुकेशन पॉलिसी-20. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट साइंस*, 12(4), 81–86. <https://rjpn.org/IJCSPUB/papers/IJCSP22D1370.pdf>
- सिंह, श्रीकांत (2026). रोल कॉन्फ्लिक्ट ऑफ स्प्रिचुअल एंड मॉरल वैल्यूज इन एजुकेशन, स्पेसिफिकली इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ मालवीयाज फिलॉसफी एंड द नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (एनईपी) 2020. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिलिजन एजुकेशन एंड लॉ*, 5(1). <https://doi.org/10.57235/ijrael.v5i1.7875>